International Journal in Management and Social Science
Volume 9 Issue 12, Dec 2021 ISSN: 2321-1784 Impact Factor: 7.088
Journal Homepage: http://ijmr.net.in, Email: irjmss@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal

बैराठ का ऐतिहासिक महत्व

पवन भंवरिया
सहायक आचार्य (इतिहास)
राजकीय कला महाविद्यालय, सुजानगढ़

जयपुर ज़िले में स्थित विराटनगर भारतीय प्राचीन इतिहास और पुरातत्व के संदर्भ में एक अत्यंत महत्वपूर्ण स्थल माना जाता है। प्राचीन काल में इसे बैराठ के नाम से जाना जाता था।, महाभारत–कालीन परंपरा के अनुसार यह नगर मत्स्य जनपद की राजधानी था, जहाँ पांडवों ने अपने अज्ञातवास के अंतिम वर्ष का निवास पूर्ण किया।[1] राजा विराट के शासन से संबद्ध होने के कारण इस भू–भाग को 'विराटनगर' नाम प्राप्त हुआ[2], जो उस समय की राजनीतिक–सांस्कृतिक सत्ता का केंद्र था। उल्लेखनीय है कि मत्स्य जनपद प्राचीन भारत के सोलह महाजनपदों में एक प्रमुख सत्ता–धुरी के रूप में स्थापित था।

विराटनगर का महत्व प्रारम्भिक ऐतिहासिक युग में भी स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। सम्राट अशोक के शासनकाल (तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व) में यह क्षेत्र बौद्ध धर्म के प्रसार हेतु एक सक्रिय केंद्र रहा। बीजक की पहाड़ी पर प्राप्त अशोक के शिलालेख मौर्योत्तर काल के धार्मिक अनुष्ठानों, प्रशासनिक नीतियों और सम्राट अशोक की धम्म–विजय नीति का मूल्यवान साक्ष्य प्रदान करते हैं। ये अभिलेख इस क्षेत्र की उस समय की राजनीतिक संरचना और बौद्ध उपस्थिति को रेखांकित करते हैं।

गुप्त काल (चौथी–छठी शताब्दी ई.) में यह क्षेत्र व्यापारिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का विकसित केंद्र बनकर उभरा। पुरातात्त्विक उत्खननों से प्राप्त बौद्ध स्तूपों, शैलाश्रयों, मठीय अवशेषों तथा जैन धर्म से संबंधित मूर्तिकला और स्थापत्य सामग्री से यह स्पष्ट होता है कि विराटनगर अनेक धार्मिक परंपराओं का संगम–क्षेत्र रहा है। इन अवशेषों के आधार पर इस क्षेत्र की दीर्घ सांस्कृतिक निरंतरता और धार्मिक बहुलता का पुनर्निर्माण संभव होता है।

---

[1] तरूण, तेजसिंह, राजस्थान के बोलते खण्डहर, शशि प्रकाशन, नई दिल्ली, 1972, पृ. 12–13

[2] शर्मा, महावीर सिंह, मेवाती का उद्भव और विकास, लोकभाषा प्रकाशन, जयपुर, 1977, पृ. 20–21

भौगोलिक दृष्टि से देखें तो प्राचीन मत्स्य जनपद की सीमाएँ उत्तर में कुरु (हस्तिनापुर), दक्षिण में अवंती, पूर्व में शूरसेन (मथुरा) और पश्चिम में सिंधु–गांधार क्षेत्र तक विस्तृत थीं।[3] यह व्यापकता न केवल मत्स्य की राजनीतिक शक्ति को संकेतित करती है, बल्कि इस क्षेत्र के व्यापार मार्गों, सांस्कृतिक संपर्कों और सामरिक महत्त्व को भी रेखांकित करती है।

सारांशतः विराटनगर (बैराठ) महाभारत परंपरा, मौर्य शासन, शुंग और गुप्तकालीन इतिहास, तथा बौद्ध–जैन धर्म की पुरातात्त्विक परंपरा, सभी के संदर्भ में एक अत्यंत महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थल है। भारतीय इतिहास की धार्मिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक यात्रा में इसकी भूमिका विशिष्ट और बहुआयामी रही है।

विराटनगर (मत्स्य संघ) भारत के प्राचीन इतिहास और संस्कृति का एक महत्वपूर्ण केंद्र रहा है। महाभारत कालीन घटनाओं से लेकर मौर्य और गुप्त साम्राज्य के दौरान यह क्षेत्र एक राजनीतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक केंद्र के रूप में उभरा। इसकी सीमाएँ और ऐतिहासिक घटनाएँ इसे प्राचीन भारतीय इतिहास के अध्ययन के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण बनाती हैं।

भौगोलिक स्थिति

बैराठ (विराटनगर) अरावली पर्वतमाला के उत्तरी विस्तार में अवस्थित एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थल है। इसकी भौगोलिक स्थिति उत्तरी अक्षांश $27^{0}18'$ तथा पूर्वी देशांतर $76^{0}10'$ है।[4] इसे प्राचीन उत्तर भारत की राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक गतिविधियों के संदर्भ में विशेष महत्व प्रदान करती है। अरावली श्रेणी से घिरे उपजाऊ मैदानी क्षेत्र में स्थित होने के कारण यह न केवल प्राकृतिक सुरक्षा से युक्त था अपितु जल, वन और पशुधन जैसे आवश्यक संसाधनों की उपलब्धता के कारण प्राचीन काल से ही मानव बसावट के लिए अनुकूल रहा।

विराटनगर जयपुर से लगभग 85 किलोमीटर उत्तर–पूर्व में तथा अलवर ज़िले की सीमा के निकट स्थित है। इसका भू–परिदृश्य मुख्यतः पहाड़ी एवं पठारी विशेषताओं से निर्मित है। इनमें बीजक की

[3] मिश्रा, सुदामा, प्राचीन भारत में जनपद राज्य, काशी विद्यापीठ प्रकाशन, वाराणसी, 1972, पृ. 67

[4] Google Maps. (7 December, 2025). Location coordinates of Viratnagar, Rajasthan (27.1830° N, 76.1020° E). Google

पहाड़ी विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जहाँ से मौर्यकालीन बौद्ध शिलालेख, गुफाएँ एवं अन्य पुरातात्त्विक अवशेष प्राप्त हुए हैं, जो इस क्षेत्र की सांस्कृतिक–बौद्धिक परंपरा का महत्त्वपूर्ण प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। भू–आर्थिक दृष्टि से यह क्षेत्र प्राचीन व्यापारिक मार्गों के संगम पर स्थित था जिसके माध्यम से यह कुरु, शूरसेन तथा गांधार जैसे समकालीन जनपदों से जुड़ा हुआ था।

यहाँ की जलवायु अर्ध–शुष्क है। ग्रीष्म ऋतु में तापमान अपेक्षाकृत उच्च रहता है जबकि शीत ऋतु में ठंडक अनुभव की जाती है। मानसूनी वर्षा मध्यम स्तर की होती है जो कृषि के लिए पर्याप्त मानी जाती है। आसपास की भूमि मुख्यतः कृषि एवं पशुपालन के अनुकूल है और स्थानीय जनजीवन परंपरागत रूप से इन्हीं गतिविधियों पर आधारित रहा है।

विराटनगर की भौगोलिक एवं पर्यावरणीय विशेषताओं ने इसे प्राचीन काल में एक सुरक्षित, संसाधन–संपन्न एवं रणनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थल के रूप में स्थापित किया। परिणामस्वरूप यह क्षेत्र विभिन्न जनपदों और साम्राज्यों की राजनीतिक–सांस्कृतिक संरचना में एक विशिष्ट स्थान रखता आया है।

बैराठ के शैलचित्र एवं शैलाश्रय

बैराठ न केवल अपनी पुरातात्विक महत्ता के लिए विख्यात है बल्कि यहां प्राप्त शैलचित्र और शैलाश्रय भी विशेष आकर्षण का विषय हैं। विराटनगर के आस–पास की पहाड़ियों में अनेक शैलचित्र पाए गए हैं जो प्रागैतिहासिक काल से लेकर ऐतिहासिक काल तक के मानव जीवन और संस्कृति को दर्शाते हैं। ये शैलचित्र विभिन्न आकृतियों और रंगों से बने हुए हैं जिनमें मानव और पशुओं के चित्र मुख्य हैं।[5] शैलाश्रय, पत्थरों की प्राकृतिक गुफाएं या आश्रय स्थल होते हैं, जो प्राचीन मानवों के निवास स्थल के रूप में कार्य करते थे। विराटनगर के शैलाश्रयों का महत्व उनके भू–आकृतिक और पुरातात्विक पहलुओं में निहित है। विराटनगर के चारों तरफ अरावली की पर्वत श्रेणियाँ हैं जो सलेटी रंग के कठोर ग्रेनाइट की हैं। ये पर्वत श्रेणिया 70 डिग्री का कोण बनाती है और दोहरी होने के कारण गुफाओं–कन्दराओं का निर्माण करती हैं जिनमें आदिमानव आसानी से निवास करता था। ये गुफाएँ

[5] शर्मा, सी.एल., मत्स्य संघ का पुरातात्विक एवं सांस्कृतिक इतिहास, मालती प्रकाशन, 1993, पृ. 19–23

मुख्य रूप से बीजक की पहाड़ी, गणेश गिरी, भीमसेन डूंगरी व पापड़ा की डूंगरी में स्थित है। इनमें कुछ गुफाएं इस प्रकार हैं –

बीजक की पहाड़ी पर स्थित गुफाएँ

यहां स्थित विराटनगर (बैराठ) क्षेत्र में स्थित एक ऐतिहासिक और पुरातात्विक स्थल है। यह पहाड़ी विशेष रूप से अपनी गुफाओं के लिए जानी जाती है जो प्राचीन काल से धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व रखती हैं। इन गुफाओं का निर्माण मौर्य काल (लगभग तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व) के दौरान हुआ माना जाता है। बीजक की पहाड़ी पर स्थित गुफाएँ बौद्ध धर्म से जुड़ी हुई हैं। ऐसा माना जाता है कि ये गुफाएँ बौद्ध–भिक्षुओं के ध्यान और निवास के लिए बनाई गई थीं। इन गुफाओं में चट्टानों को काटकर बनाए गए शिलालेख और संरचनाएँ तत्कालीन वास्तुकला और शिल्पकला का उत्कृष्ट उदाहरण हैं। बीजक की पहाड़ी की गुफाएँ मौर्य काल की स्थापत्य और धार्मिक परंपराओं का अद्भुत मिश्रण प्रस्तुत करती हैं। यहां से प्राप्त पुरातात्विक सामग्री जैसे – बौद्ध मूर्तियाँ और अन्य कलाकृतियाँ, उस समय के धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन पर प्रकाश डालती हैं।

सर्वप्रथम ईस्ट इण्डिया कम्पनी के अंग्रेज अधिकारी कैप्टन बर्ट ने सन् 1840 ई. में एक गुफा का अवलोकन किया।[6] यह 73 फीट 2 इंच लम्बी एवं तोपनुमा है। यह सफेद रंग की स्वतंत्र चट्टान है, जिसके नीचे पत्थर की दीवार बनाकर दो गुफाएँ बनी हुई हैं। इसके दक्षिणी हिस्से में हनुमान मन्दिर बना दिया गया है तथा उत्तर के हिस्से में एक बहुत बड़ी गुफा है जो करीब 8 मीटर लम्बी है जो 4 मीटर चौड़ी है।

बीजक की पहाड़ी की गुफाएँ भारतीय सांस्कृतिक धरोहर का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। प्राकृतिक क्षरण और मानवजनित गतिविधियों के कारण इनका संरक्षण करना चुनौतीपूर्ण साबित हो रहा है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा इन गुफाओं को संरक्षित करने के प्रयास किए जा रहे हैं ताकि यह ऐतिहासिक धरोहर सुरक्षित रह सके। बीजक की पहाड़ी पर स्थित गुफाएँ न केवल बौद्ध धर्म के विकास का प्रतीक हैं अपितु मौर्य काल की स्थापत्य कला और संस्कृति का भी जीवंत प्रमाण हैं। ये गुफाएँ मानव के अतीत की धार्मिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

कछुआ आकृति की गुफा

[6] मरूभारती, खण्ड 50, वर्ष, 2002, बिरला एजुकेशन सोसायटी, पिलानी, पृ. 172

यह गुफा 10ग8 मीटर की है। इस गुफा में हजारों वर्ष पुराने शैलचित्र खोजे गए हैं। यह गुफा इतनी सुरक्षित है कि आदिमानव को निवास के लिए विशेष प्रयत्न व निर्माण कार्य नहीं करना पड़ा होगा। इस गुफा से वह शीत, ग्रीष्म व वर्षा ऋतु में सुरक्षित रहा होगा। इसके अतिरिक्त चट्टानों में जगह–जगह पानी एकत्रण के लिए प्राकृतिक स्थान बने हुए हैं।

गणेश गिरी के शैलाश्रय

यह बीजक की पहाडी से पूर्व दिशा में 500 मीटर दूर स्थित है। यहाँ भी कई आकार की छोटी–बड़ी गुफाएँ हैं जहाँ आदिमानव के क्रियाकलापों के अवशेष प्राप्त हुए हैं। गणेश मन्दिर के पास भी एक शैलाश्रय है जहाँ पहले आसानी से शैलचित्र देखे जा सकते थे लेकिन वर्तमान में देखरेख के अभाव में तथा आमजन एवं पर्यटकों द्वारा की जाने वाली सामूहिक गोठों से गुफा धुआं से धूमिल हो गई है। इसके निकट ही राजकीय संग्रहालय के पास पूर्व दिशा की तरफ एक अन्य गुफा में शैलचित्र प्राप्त हुए हैं जो अब भी सुरक्षित हैं क्योंकि ये प्राकृतिक क्षरण एवं मानवजनित हानिकारक क्रियाकलापों से बचे हुए हैं।

भीमडूंगरी में स्थित शैलचित्र एवं शैलाश्रय

विराटनगर (बैराठ) के उत्तर में एक किलोमीटर की परिधि में भीमडूंगरी नामक पहाड़ी विस्तारित है। इस पहाड़ी में ग्रेनाइट की चट्टानें हैं, जिसके दक्षिणी छोर में अशोक का शिलालेख लगा हुआ है एवं इस पहाड़ी के चारों ओर प्राकृतिक गुफाएं बनी हुई हैं। इन गुफाओं अनेक शैलचित्र मिले हैं। इस पहाड़ी के चारों ओर जल भराव वाले स्थानों के आस–पास भी शैलचित्रों के भण्डार खोजने के प्रयत्न किए जा रहे हैं।

पापड़ा डूंगरी में स्थित शैलचित्र एवं शैलाश्रय

बैराठ के उत्तरी–पूर्वी छोर पर डेढ़ किलोमीटर लम्बी डूंगरी है, जो अरावली पर्वत श्रृंखला से जुड़ी हुई है। पापड़ा डूंगरी में भी शैलाश्रय बने हुए हैं जो मानव विकास–काल में आदिमानव की शरणस्थली रहे होंगे।

यहां स्थित शैलाश्रयों में अनेक शैलचित्रों की खोज की गयी है। ये चित्र राजस्थान में अलनियाँ (कोटा), मिर्जापुर (उत्तरप्रदेश), सिंगनपुर, पंचमढ़ी एवं भीमबेटका (मध्यप्रदेश) तथा चन्द्रधरपुर (बिहार) और कुडाला व अंगोला (तमिलनाडु) से प्राचीन हैं।

ये शैलचित्र सामान्य हैं एवं मानव की प्रारम्भिक साधारण स्थिति को प्रकट करते हैं। इन चित्रों से आदिमानव की पारिवारिक एवं सामाजिक संकटमय स्थिति परिस्थितियों का आंकलन किया जा सकता है। इन शैलचित्रों से यह जानकारी भी प्राप्त होती है तत्समय कुछ वन्य जीवों का रूप कितना विशाल होता था तथा मानव उनका शिकार पाषाणिक औजारों से करते थे। इतना ही नहीं, इनमें दिशासूचक एवं ज्यामितीय चित्रों से तत्कालीन मानव बुद्धि का अनुमान भी होता है। इस प्रकार यह शैलचित्रों ने मानव इतिहास के अध्ययन में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान किया है। अभी तक जिन शैलचित्रों को पहचाना जा चुका है उनमें मुख्य रूप से हाथी, चीता, भालू, हिरण, शुतुरमुर्ग, बैल एवं ज्यामितिय अलंकरण आदि हैं।

ये चित्र गतिमान प्रतीत होते हैं। एक चित्र में पशु का शिकार करते हुए मनुष्य को बताया है जिसके एक हाथ में भाला एवं दूसरे हाथ में ढाल है। इन शैलचित्रों का अध्ययन करने से यह ज्ञात होता है कि पाषाण युग में मानव ने अपने चारों ओर के वातावरण की स्मृति बनाए रखने के लिए अपनी विजय की भावना को मूर्त रूप देने एवं चिरस्थायी बनाने के लिए चित्रांकन किया था। ये शैलचित्र सहस्त्र वर्षों बाद भी ऐतिहासिक अध्ययन के रूप में उपयोगी सिद्ध हो रहे हैं। विराटनगर (बैराठ) से प्राप्त शैलचित्रों ने यह प्रमाणित कर दिया है कि मत्स्य संघ ने भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता तथा विकास में महत्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत की।

ये शैलचित्र न केवल राजस्थान के लिए अपितु भारतवर्ष के अत्यन्त महत्वपूर्ण माने जाते हैं। भारतवर्ष में उत्तरपाषाणकालीन एवं विभिन्न स्थानों में पूर्वपाषाणकालीन शैलचित्र दक्षिण भारत में विशेषकर तमिलनाडु में प्राप्त हुए हैं परन्तु विराटनगर (बैराठ) में प्राप्त शैलचित्र तो तमिलनाडु में प्राप्त शैलचित्रों से भी काफी पुराने हैं।

पाषाणकालीन स्थिति

मानव सभ्यता के ऊषाकाल के काल के रूप में माना जाने वाला पाषाणकाल बताता है परवर्ती काल में मानव पूर्णतः प्रकृति पर निर्भर था और सभ्यता से अपरिचित भी। उसके पास न रहने के लिए उचित आवास व्यवस्था भी और न शरीर को ढकने के लिए वस्त्र। वह कृषि व पशुपालन से भी अनभिज्ञ था। वह पशुओं का शिकार कर अपनी उदरपूर्ति करता था। ऐतिहासिक अध्ययनों से ज्ञात होता है कि आदिमानव सभ्यता के उदय हेतु वे ही स्थान उपयुक्त थे जहाँ पर रहने के लिए गुफा–कन्दराएं, खाने के लिए कन्दमूल, फल एवं शिकार के लिए पशु–पक्षी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध थे। बैराठ क्षेत्र इस

दृष्टि से पर्याप्त साधन एवं सुविधाएँ उपलब्ध कराता था। डॉ. दयाराम साहनी द्वारा 1936 ई. में बीजक के उत्खनन से ज्ञात हुआ कि यहाँ आदिमानव निवास करता था।[7] परन्तु 1950 ई. के पश्चात के वर्षों में यहां पूर्व पाषाणकाल से चलकर उत्तर पाषाणकाल तक के पाषाणकालीन उपकरण प्राप्त हुए हैं जिनसे शैल सभ्यता की पुष्टि होती है। विराटनगर के परिसर में प्राप्त उपकरण निम्न हैं –

पाषाण के उपकरण

मनुष्य पशुओं के शिकार करने के लिए पूर्व पाषाण उपकरणों का उपयोग करता था। ये हथियार अच्छी किस्म के न होकर भौण्डे एवं भद्दे किस्म के होते थे। ये कठोर पत्थर को सहायता से काटकर बनाए जाते थे। इन्हीं हथियारों की सहायता से शिकार करते थे, इन हथियारों में छेद भी होता था, जिनमें लकड़ी एवं हड्डी के हत्थे भी लगे रहते थे।

ताम्र सभ्यता

राजस्थान में विराटनगर एक ऐसा विशिष्ट स्थान है जहाँ काफी पुराने अर्थात पूर्व पाषाणकाल, मध्यपाषाण काल वाले उपकरण भी मिलते हैं, जो इस बात को प्रमाणित करते हैं कि विराटनगर की पाषाण कालीन सभ्यता का बड़ा केन्द्र था।[8]

मत्स्य प्रदेश शैल सभ्यता का ही नहीं अपितु ताम्र सभ्यता का भी प्रमुख केन्द्र था। जिस प्रकार आदिमानव की पाषाणकालीन शैल सभ्यता के विकास में यहाँ की भौगोलिक परिस्थितियों ने महत्वपूर्ण सहयोग दिया, ठीक उसी प्रकार इस क्षेत्र में उपलब्ध ताम्र सम्पदा के विपुल भण्डार ने इस सभ्यता के विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत की थी।[9] उत्खनन् एवं सर्वेक्षण में विपुल मात्रा में तांबे के उपकरण, मिट्टी के बर्तन तथा अन्य महत्वपूर्ण सामग्री प्राप्त हुई है, जिनके अध्ययन से यह प्रमाणित हो चुका है यह क्षेत्र ताम्र सभ्यता का समृद्ध केन्द्र था। उस समय पूरे क्षेत्र में चारों तरफ अनेक समृद्ध खानें थी। डॉ. महावीर प्रसाद शर्मा ने तो अपने तोरावाटी का इतिहास में आज से 4500 वर्ष पूर्व की राष्ट्रीय ताम्र परियोजना के अस्तित्व का वर्णन किया है।[10]

---

7 शर्मा, सी.एल., पूर्वोक्त, पृ. 134

8 प्रोसिडिंग्स ऑफ हिस्टोरिकल रिकॉर्ड कमीशन, नई दिल्ली, 1976 के वर्णन के अनुसार

9 मरूभारती, खण्ड 30, वर्ष, 1982, बिरला एजुकेशन सोसायटी, पिलानी, पृ. 1–3

10 शर्मा, महावीर प्रसाद, तोरावाटी का इतिहास : कोटपूतली क्षेत्र, प्रकाशन समिति, 1980, पृ. 27

मुगलकाल में भी यहाँ पर तांबे का उद्योग चरम स्तर की सीमा पर था। विराटनगर में राष्ट्रीय स्तर की टकसालें मौजूद थी, जहाँ तांबे के सिक्कों के अलावा अन्य उपकरण भी होते थे। यह तांबे की तकनीक में इतना अधिक विकसित थी कि बैराठ के नाम के सिक्के कई शताब्दियों तक चालू रहे, जिसका सुन्दर वर्णन आइने अकबरी में अबुल फजल ने किया है। इसी प्रकार का वर्णन लाटा संहिता में भी मिलता है।

मिट्टी के बर्तन एवं अन्य सामग्री

तांबे के उपकरणों का तुलनात्मक अध्ययन करने के पश्चात इस संदर्भ में मिट्टी के बर्तनों का विवेचन करना भी समीचीन होगा। चूंकि इतिहास के अभाव में पुराविद् वैज्ञानिक विधि से समय का आकलन करने को मुख्य आधार मानते हैं। तांबे के उपकरणों के अलावा मत्स्य क्षेत्र में बहुत बड़ी संख्या में मिट्टी के उपकरण भी प्राप्त हुए हैं। ये उपकरण मुख्य रूप से गांवडी–गणेश्वर, जोधपुरा, सुनारी, मैड़ एवं विराटनगर में प्राप्त हुए है। यह क्षेत्र आज के 5 हजार वर्ष पूर्व भी किस प्रकार एकता के सूत्र में बंधा हुआ था, वह इस बात से सिद्ध हो जाता है कि जोधपुरा में प्राप्त मिट्टी का मृदभाण्ड गणेश्वर में प्राप्त भाण्ड से बिल्कुल समानता रखता है।[11]

महाभारत काल

महाभारत काल में विराटनगर मत्स्यप्रदेश की राजधानी जो, आर्थिक, राजनैतिक एवं सामाजिक दृष्टि से अत्यन्त समृद्ध। वेदव्यास ने महाभारत पूर्व एवं विराटपर्व में इसकी सम्पन्नता वैभवता का अत्यन्त सुन्दर चित्रण किया है। जहाँ एक तरफ सुख–सुविधा की दृष्टि से रथ, महल एवं वस्त्रों के अलावा अनेक जनोपयोगी वस्तुओं का विपुल भण्डार था। वहीं दूसरी तरफ विध्वंसक अनेक अस्त्र–शस्त्र एवं अमोघ शक्तियों का विकास भी हुआ था। जिस प्रकार आज़ के वैज्ञानिक युग में मानव जाति के संहारक परमाणु हाइड्रोजन एवं नाइट्रोजन जैसे विध्वंसक हथियारों जखीरा विश्व के समस्त देशों में जमा हो रहा है, ठीक उसी प्रकार महाभारत काल में भी तत्कालीन महायुद्ध को रोकने का अथक प्रयास किया गया, जिसमें मत्स्य संघ की अहम भूमिका रही। मत्स्य देश की राजधानी विराटनगर में भारत के प्रमुख राजाओं का दो बार सम्मेलन हुआ एवं कौरवों की तरफ से शान्ति दूतों को भेजकर युद्ध को रोकने का प्रयास किया गया।

[11] मिश्रा, रतनलाल, शेखावाटी का नवीन इतिहास, कुटीर प्रकाशन, 1998, पृ. 20

महाभारत की राजनीति एवं कूटनीति का प्रमुख केन्द्र मत्स्य देश की राजधानी विराटनगर ही रहा है। वास्तव में देखा जाय तो यदि मत्स्य राजा विराट न होता तो महाभारत का इतिहास कुछ और ही होता। चूंकि कई बार ऐसे प्रसंग एवं वारदातें सामने आयीं हैं, जिससे स्पष्ट संकेत मिलता था कि वे पाण्डव ही थे, परन्तु राजा विराट पाण्डवों के परम हितैषी एवं मित्र थे। अतः उन्होंने बात का आभास होते हुए भी कि ये लोग पाण्डव ही हैं तथा उजागर नहीं किया ऐसा नाटक किया कि मानो वे उनसे ये लोग बिल्कुल अनभिज्ञ हैं तथा साधारण सेवक है। महाभारत के विराटपर्व में उल्लेख मिलता है कि पाण्डवों ने अपने वनवास के अंतिम तेरहवें वर्ष को विराटनगर में व्यतीत करने की मंत्रणा की थी जिसका वर्णन इस प्रकार आता है –

मत्स्यो विराटो बलवानभिरक्षेत्स पाडवान् ।
धर्मशीली वदान्यश्च वृद्धश्च सुमहाधनः।।[12]

अर्थात् मत्स्य देशका राजा विराट, धार्मिक, शक्तिशाली,उदार, धनवान् और बुद्ध है, वह पाण्डवोंका रक्षण करेगा।

विराटनगरे तात संवत्सरमिमं वयम् ।
कुर्वन्तस्तस्य कर्माणि विहरिष्याम भारत।।[13]

अर्थात् हम लोग एक वर्ष तक उसी के यथायोग्य कार्य करते हुए विराटनगर में विहार करेंगे।

इस प्रकार निश्चिन्त होकर पाण्डव एक–एक करके विराट राज के दरबार में पहुंचे। धर्मराज युधिष्ठिर गेरुआ वस्त्र धारण कर राजा के दरबार में पहुँचा जो महाराजा विराट का दरबार इन्द्र के समान सुशोभित हो रहा था। युधिष्ठिर ने कहा कि मैं आपकी सेवा करने आया हूं, हे राजन मुझे सेवा का मौका दें। राज विराट बोले हे संन्यासी आपकी सेवा तो हमें करनी चाहिए। आप संन्यासी हो कोई महापुरुष लगते हो। आप क्या कार्य कर सकते हो जो मैं आपको बता सकूं। मत्स्य राज के सभासदों ने भी उन्हे साधारण पुरुष न समझ कर नौकरी देने से इन्कार कर दिया, परन्तु बार–बार अनुनय विनय करने पर राजा विराट ने पूछा कि आप कौन हो? कहाँ से आये हो? तथा क्या काम कर सकते

[12] महाभारत, विराटपर्व, दामोदर सताळवेकर (सं.), प्रथम अध्याय, श्लोक 13, स्वाध्याय मण्डल, पारडी, जिला बलसाड, 1961, पृ. 3

[13] वही, श्लोक 14

हो? इस पर युधिष्ठिर ने कहा मैं एक ब्राह्मण हूँ, मेरा नाम कंक है, युधिष्ठिर के यहाँ चौपड़ पासा का खेल खिलाता था परन्तु अब मेरे पर कोई काम नहीं है, राजा ने कंक बने युधिष्ठिर को काम पर रख लिया। यथा –

युधिष्ठिरस्यासनहं पुरा सखा वैयाघ्रपद्यः पुनरस्मि ब्राह्मणः ।
अक्षान्प्रवप्तुं कुशलोऽस्मि देविता कङ्केति नाम्नास्मि विराट विद्युतः।।[14]

इसके पश्चात् इन्द्र के समान दैदीप्यमान, सिंह के सदृश गतिधारी भीम मत्स्यराज विराट के पास पहुंचा तथा भीम ने राजा विराट को अपने यहाँ नौकर रखने की प्रार्थना की तथा उसने कहा कि मैं रसोईया का काम आपके यहाँ कर सकता हूँ। इस पर राजा विराट को आश्चर्य हुआ, उन्होंने कहा कि आप तो एक अत्यन्त दिव्य पुरुष दिखाई देते हो। आपका व्यक्तित्व किसी गंधर्व राजा से कम नहीं है। शरीर सुडौल एवं दृढ़ दिखाई देता है फिर यह समझ में नहीं आता कि क्या आप वास्तव में नौकरी करने आये हो।

इस पर भीम ने बड़ी विनम्रता से अपनी मजबूरी प्रकट करते हुए कहा कि हे राजन् आप मुझ पर विश्वास करें। मेरा नाम बल्लभ है, मैं वास्तव में आपके यहां रसोईया का काम करने आया हूं। मुझे दाल, सब्जी व अन्य लजीज व्यंजन एवं स्वादिष्ट भोजन बनाने का कार्य खूब आता है। इस पर राजा विराटने न चाहते हुए भी बल्लभ को पाकशाला का अध्यक्ष नियुक्त कर दिया। यथा –

ततो विराटं समुपेत्य पाण्डवः सुदीनरूपो वचनं महामनाः।
उवाच सूदोऽस्मि नरेन्द्र बल्लवो भजस्व मां व्यंजनकारमुत्तमम्।।[15]

इसके पश्चात् अर्जुन ने नंपुसक धारण कर विराट राज्य के दरबार में प्रवेश किया एवं अपना परिचय देते हुए कहा मेरा वृहन्नलां है, मुझे नाचना, गाना एवं बजाना आता है। मैं यह काम पाण्डवों के यहां करता था। परन्तु अब उनका पता नहीं है। राजन् मैं गाता, नाचता और बाजे बजाता हूं। नृत्यकला में निपुण हूँ और संगीत कला में कुशल हूँ। आप उत्तरा को शिक्षा देने के लिए मुझे रख लें, मैं स्वयं कुमारी उत्तरा को नृत्य सिखलाऊँगा। तब यह सुन समझकर विराट ने वृहन्नला को नपुंसक मानकर अन्तःपुर में जाने की आज्ञा दी। यथा –

[14] वही, अध्याय 6, श्लोक 10, पृ. 25

[15] वही, अध्याय 7, श्लोक 5, पृ. 27

गायामि नृत्याम्यथ वादयामि भद्रोऽस्मि नृत्ते कुशलोऽस्मि गीते ।
त्वमुत्तरायाः परिदत्स्व मां स्वयं भवामि देव्या नरदेव नर्तकः।।[16]
बृहन्नलां तामभिवीक्ष्य मत्स्यराट् कलासु वृत्ते च तथैव वादिते ।
अपुंस्त्वमष्यस्य निशम्य च स्थिरं ततः कुमारीपुरमुत्ससर्ज तम्।।[17]

इसके पश्चात नकुल ने घोड़ों की विद्या जानने वाला, सहदेव ने गायों का जानकार व द्रौपदी ने स्वयं को दासी बताााया और क्रमशः अपने नाम ग्रन्थिक, तन्तिपाल व सैरन्ध्री बताया। इस प्रकार अपने अलग–अलग कार्यों की कार्यकुशलता बताकर राजा विराट के यहाँ नौकरी प्राप्त कर ली।

इस प्रकार पाण्डव विराटनगर में एक वर्ष अपना एक वर्ष का अज्ञातवास शांतिपूर्वक व्यतीत करने लगे।

विराटनगर के कुरुक्षेत्र में पाण्डवों की ऐतिहासिक विजय

अज्ञात के समय अंतिम दिनों में कौरवों ने राजा विराट की गायें चुरा ली, इस अधर्म के कार्य को पाण्डव सहन नहीं कर सके तथा गौधन को कौरवों से मुक्त कराया। भीमसेन की डूंगरी के आसपास वाला क्षेत्र छोटा कुरुक्षेत्र कहलाता है। हरियाणा में पानीपत के पास स्थित कुरुक्षेत्र इसलिए कुरुक्षेत्र कहलाता है चूंकि यहाँ पर महाभारत का भीषण संग्राम हुआ था। तथा इससे पूर्व विराटनगर में भीमसेन की डूंगरी के नीचे वाला मैदान भी कुरुक्षेत्र इसलिए कहलाता है कि यहाँ भी कौरवों एवं पाण्डवों का महत्वपूर्ण युद्ध हुआ था। जिससे पाण्डवों ने विराटनगर की भूमि पर ऐतिहासिक विजय प्राप्त की थी। विराटनगर कस्बे में कई प्राचीन स्मारक, धार्मिक एव ऐतिहासिक स्थल स्थित है। यहाँ पर उपलब्ध बौध मठ के अवशेष भारत में तृतीय शताब्दी के सबसे पौराणिक बौध मठों में से एक है। यहाँ बादशाह अकबर के समय के भवन है जिन पर छतरियाँ एवं राजस्थानी कला की आकृतियाँ व विश्राम गृह विद्यमान है। जिनमें मुगल बादशाह शिकार करने के लिए तथा प्रतिवर्ष अजमेर तीर्थयात्रा पर जाते समय विश्राम करते थे। यहाँ बीजक की पहाड़ी पर सूर्य एवं चन्द्रमा की गतियों की गणना हेतु भूगोल विद्या के अनुसार बना ढांचा भी है, जो कि तृतीय शताब्दी के सम्राट अशोक के साम्राज्य के समय का माना जाता है। सोहलवीं शताब्दी की नसियाँ भी है जहां पर तीन कुएं है जो उस समय कृषि हेतु पानी के निकास की व्यवस्था से जुड़े है।

16 वही, अध्याय 10, श्लोक 8, पृ. 38

17 वही, श्लोक 11

वर्तमान में विराटनगर के शैलचित्र और शैलाश्रय भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण द्वारा संरक्षित हैं। इनका अध्ययन न केवल भारत के इतिहास और संस्कृति को समझने में मदद करता है, बल्कि मानव सभ्यता के विकास के विभिन्न चरणों पर भी प्रकाश डालता है। पर्यावरणीय और मानवजनित खतरों से इनका संरक्षण आवश्यक है ताकि आने वाली पीढ़ियां भी इस धरोहर को देख सकें।

निष्कर्षतः विराटनगर के शैलचित्र और शैलाश्रय भारत की प्राचीन सांस्कृतिक धरोहर के अनमोल रत्न हैं। ये स्थल न केवल मानव सभ्यता के प्राचीन स्वरूप को उजागर करते हैं, बल्कि तत्कालीन समाज की जीवनशैली, धार्मिक विश्वासों और कलात्मक अभिव्यक्तियों का भी जीवंत प्रमाण हैं। शैलचित्रों में दिखाई देने वाली सरलता और कलात्मक सौंदर्य प्रागैतिहासिक काल के लोगों की संवेदनशीलता और उनके पर्यावरण से जुड़ाव को दर्शाते हैं। शैलाश्रय प्राचीन मानव के निवास और सुरक्षा के साथ–साथ उनके धार्मिक और सामाजिक गतिविधियों के केंद्र भी थे। इन स्थलों का संरक्षण आवश्यक है, ताकि यह अनमोल धरोहर आने वाली पीढ़ियों के लिए अध्ययन और प्रेरणा का स्रोत बनी रहे। विराटनगर के शैलचित्र और शैलाश्रय भारत के प्राचीन सांस्कृतिक धरोहर के महत्वपूर्ण अंग हैं। ये स्थल मानव इतिहास के अनमोल दस्तावेज हैं, जो प्रागैतिहासिक से लेकर ऐतिहासिक काल तक की संस्कृति, धर्म, और जीवन शैली को उजागर करते हैं।

सन्दर्भ